नन्ददुलारे वाजपेयी की आलोचना

डॉ अनामिका जैन
सहायक आचार्य
हिन्दी विभाग

- नन्ददुलारे वाजपेयी की पहली कृति ”हिंदी साहित्य : बीसवीं शताब्दी” है | इसमें इनके 1930 से 1940 ई. के मध्य लिखे गए निबंधों का संकलन है |
- इस ग्रंथ से नंददुलारे वाजपेय को विशिष्ट नवागत के प्रेमी, प्रशंसक और विवेचक के रूप में साहित्य में प्रतिष्ठा मिली |
- “ हिंदी साहित्य : बीसवीं शताब्दी ” की भूमिका में आचार्य वाजपेयी ने आलोचना संबंधी अपनी सात चेष्टाओं को की ओर संकेत किया है - (1) कवि की अंतवृतियों का अध्ययन (2) कलात्मक वस्तुओं का अध्ययन (3) तकनीक (शैली)

का अध्ययन (4) समय, समाज तथा उनकी प्रेरणा का अध्ययन (5) कवि की जीवनी और रचना पर उसके प्रभाव का अध्ययन (6)कवि के दार्शनिक,सामाजिक,राजनीतिक विचारों का अध्ययन (7) काव्य के जीवन संबंधी सामंजस्य तथा संदेश का अध्ययन |

- नंददुलारे वाजपेयी में चार प्रमुख समीक्षा-पद्धतियों से बचने की बात कही है -

(1) वैयक्तिक मनोविज्ञान पर आधारित (फ्रायड, युगं और एडलर से प्रभावित)

(2) समाजवादी समीक्षा (माक्र्सवादी समीक्षा)

(3) कला - विज्ञानवादी पुरानी परंपरा

(4) उपयोगितावादी या नीतिवादी (आई ए रिचर्ड्स की समीक्षा

- आचार्य वाजपेय ने रस को भारतीय काव्यशास्त्र का अंतरंग सत्व, 'अलंकार' को सौंदर्य का उद्घाटक तथा 'वक्रोक्ति', 'रीति' और 'ध्वनि' को काव्य की अभिव्यंजना पक्ष से संबंधित माना है |
- नंददुलारे वाजपेयी पश्चात और भारतीय काव्यशास्त्र के सुंदरतम तत्वों का समंवय चाहते है |

- आचार्य नंददुलारे वाजपेयी भारतीय विचारधारा को आदर्श उन्मुख रखते हुए स्वस्थ और विकास उन्मुख यथार्थवाद को स्वीकार करना चाहते है |
- नंददुलारे वाजपेय ने प्रकृतिवादी यथार्थवाद, अंतश्चेतनावादी यथार्थवाद तथा निराशा और कुंठावादी यथार्थवाद को हिंदी साहित्य से अलग रखने की बात कही है |
- भारतीय साहित्यशास्त्र में भावक या समीक्षक को "सहृदय" कहा गया है | आचार्य वाजपेय ने सहृदय का अर्थ 'मानवीय संबंधों से परिचित' व्यक्ति माना है |

- नंददुलारे वाजपेयी ने ”नई कविता” के संदर्भ में चर्चित क्षण-वाद, संशयवाद, लघुमानववाद, अस्तित्ववाद आदि को युद्ध की विभीषिका और ”प्रयोगवाद” के रूप में माना है |
- आचार्य वाजपेय के अनुसार, “नई कविता” में एक ही समर सता आ रही है, जो भारतीय काव्य- चिंतन, दर्शन और विचारधाराओं की योग से बन रही है |
- आचार्य रामचंद्र शुक्ल के काव्य - सिद्धांत”तुलसी” के आधार पर निर्मित हुए हैं, तो नंददुलारे वाजपेयी की काव्य मान्यताऐ “प्रसाद” से प्रभावित है |

- आचार्य नंददुलारे वाजपेयी के अनुसार, “ कला कभ अश्लील नहीं हो सकती और ”सौंदर” असत्य तो हो ही नहीं सकता, वह तो चेतना की झलक है |
- आचार्य नंददुलारे वाजपेयी की समीक्षा शैली की दृष्टि से व्याख्यात्मक और विवेचनात्मक है |
- आचार्य नंददुलारे वाजपेय ने निराला की “राम की शक्ति पूजा” को पांडित्यपूर्व निर्मित कहा है तथा भाव संवेदना तथा मर्मिकता की दृष्टि से उसे ‘बादल राग’ और ‘यमुना के प्रति’ जैसी रचनाओं से कमजोर माना है |

- नंददुलारे वाजपेयी ने द्विवेदी युग के कवियों/लेखकों से आरंभ करके नई कविता के कवियों, नए उपन्यास- कारों तथा नाटककारों तक की समीक्षा की है |
- आचार्य नंददुलारे वाजपेयी स्वच्छंदतावादी आलोचक के प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं |

धन्यवाद